بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

Office Of The sadar Majlis Ansarullah Bharat

دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph: +91-01872-220186, Fax : +91-01872-224186, Mob. +91-94170-20616, E-Mail : ansarullahbharat@gmail.com

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सैय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीहिल ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ **02.10.15** मस्जिद बैतुल फ़तूह लंदन।

ईमान एक बूटा है और उसकी सिंचाई कर्मों द्वारा होती है इस लिए ईमान की व्यापकता के लिए कर्म अत्यधिक आवश्यक है। यदि ईमान के साथ शुभ कर्म नहीं होंगे तो बूटे शुष्क हो जाएँगे तथा वे अपूर्ण एंव विहीन रह जाएँगे। मोमिन का काम है कर्मों के साथ साथ तौबा पर भी ध्यान दे। अर्थात प्रत्येक कठिनाई एंव परीक्षा के समय अल्लाह तआला के समक्ष झुक कर अपनी दुर्बलताओं को स्वीकार करे और फिर नेक कर्म के द्वारा अपने सुधार के क्रम को जारी रखे। संतोष, दुआ तथा अपने कर्मों से अल्लाह तआला की कृपाओं को ग्रहण करने वाले बनो और जब भी कठिनाईयों में से गुज़रो, जब भी कठिन परिस्थितियाँ आएँ तो اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّاۤ اِلَیۡہِ رٰجِعُوۡنَ कहने वालों में शामिल हो जाओ।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिलअज़ीज़ ने फ़रमाया-

وَلَنَبۡلُوَنَّکُمۡ بِشَیۡءٍ مِّنَ الۡخَوۡفِ وَالۡجُوۡعِ وَنَقۡصٍ مِّنَ الۡاَمۡوَالِ وَالۡاَنۡفُسِ وَالثَّمَرٰتِ ؕ وَبَشِّرِ الصّٰبِرِیۡنَ ۙ﴿۱۵۶﴾ الَّذِیۡنَ اِذَاۤ اَصَابَتۡہُمۡ مُّصِیۡبَۃٌ ۙ قَالُوۡۤا اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّاۤ اِلَیۡہِ رٰجِعُوۡنَ ؕ﴿۱۵۷﴾ [۲:۱۵۶]

इन आयतों का अनुवाद यह है कि हम अवश्य कुछ भय और कुछ भूख और कुछ सञ्मति तथा जानों व फलों की हानि के द्वारा तुञ्हारी परीक्षा करेंगे और धैर्य रखने वालों को सुसमाचार दे दे। वे लोग जिन पर जब कोई विपत्ति आती है तो वे कहते हैं, निश्चित रूप से हम अल्लाह ही के हैं और निःसन्देह हम उसी की ओर लौटकर जाने वाले हैं।

इन आयतों में मोमिनों की उन विशेषताओं का वर्णन किया गया है जो वे कठिनाईयों एंव दुविधाओं अथवा किसी भी प्रकार की हानि होने पर दिखाते हैं। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि एक वास्तविक मोमिन का उसी समय पता चलता है जब वह इन विशेषताओं को धारण करने वाला बने। मोमिन को कभी तो व्यक्तिगत हानियों का समाना करना पड़ता है कभी जमाअत के रूप में हानि होती है परन्तु वास्तविक मोमिन हर प्रकार की हानि से अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्त करते हुए सफल होकर निकलता है और निकलना चाहिए उसे। इस विषय पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने विभिन्न लेखों एंव कथनों में बड़े विस्तार पूर्वक रोशनी डाली। विभिन्न दृष्टि कोणों से इस विषय को बयान फ़रमाया है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इन आयतों की व्याज्या करते हुए एक स्थान पर फ़रमाते हैं कि कठिनाईयों का बुरा नहीं मानना चाहिए क्यूँकि कठिनाईयों को बुरा समझने वाला मोमिन नहीं होता। फ़रमाया कि यही कठिनाई जब रसूलों पर आती है तो उनको इनाम का शुभ समाचार देती है और जब यही कठिनाई अन्य किसी पर आती है तो उसको नष्ट कर देती है। अतः कठिनाई के समय قَالُوۡۤا اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّاۤ اِلَیۡہِ رٰجِعُوۡنَ पढ़ना चाहिए अर्थात कठिनाई के समय ख़ुदा तआला की प्रसन्नता मांगे। फ़रमाया कि मोमिन के जीवन के दो भाग हैं। जो नेक काम मोमिन करता है उसके लिए प्रतिफल निश्चित होता है परन्तु संतोष एक ऐसी चीज़ है जिसका बदला अत्यधिक है। (नेकी का बदला एक है लेकिन संतोष का बदला अत्यधिक है) ख़ुदा तआला फ़रमाता है यही लोग संतोषी हैं, यही लोग हैं जिन्होंने ख़ुदा को समझ लिया है। ख़ुदा तआला इन लोगों के जीवन के दो भाग करता है जो संतोष का अर्थ समझ लेते हैं। कभी वह मोमिन की दुआ को क़बूल करता है जैसा कि फ़रमाता है اُدۡعُوۡنِیۡۤ اَسۡتَجِبۡ لَکُمۡ तथा कभी वह मोमिन से अपनी बात मनवाना चाहता है। अतः फ़रमाता है وَلَنَبۡلُوَنَّکُمۡ بِشَیۡءٍ مِّنَ الۡخَوۡفِ। अतः इस बात को समझना ईमानदारी है कि एक ओर न झुके।

फ़रमाया कि मोमिन को कठिनाई के समय दुखी नहीं होना चाहिए, वह नबी से बढ़कर नहीं होता। वास्तविकता यह है कि कठिनाई के समय एक मुहब्बत का स्रोत जारी हो जाता है। मोमिन को कोई कठिनाई नहीं होती परन्तु जिसके द्वारा हज़ार प्रकार के आनन्द उसको न प्राप्त होते हों। फिर आपने फ़रमाया कि ख़ुदा के प्यारों को पापों के कारण कठिनाईयाँ नहीं आतीं, मोमिन के गुण ज़ी कठिनाईयों से खुलते हैं अतः देखो रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दुःखों तथा सहायता के ज़माने में आपके आचरण को किस प्रकार प्रकट किया गया। यदि रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को कठिनाईयाँ न पहुंचतीं तो अब हम उनके आचरण के विषय में क्या बयान करते। मोमिन की कठिनाईयों को निःसन्देह अन्य लोग कठिनाईयाँ समझते हैं परन्तु मोमिन

इनको कठिनाईयाँ नहीं समझता। फ़रमाया कि यह आवश्यक बात है कि इंसान अपनी सच्ची तौबा पर दृढ़ रहे और यह समझे कि तौबा से उसे एक नया जीवन मिलता है और यदि तौबा के फल चाहते हो तो कर्म के साथ तौबा को सम्पूर्ण करो। ईमान एक बूटा है और उसकी सिंचाई कर्मों द्वारा होती है इस लिए ईमान की व्यापकता के लिए कर्म अत्यधिक आवश्यक है। यदि ईमान के साथ शुभ कर्म नहीं होंगे तो बूटे शुष्क हो जाएँगे तथा वे अपूर्ण एंव विहीन रह जाएँगे।

फिर आप फ़रमाते हैं- तुम मोमिन होने की हालत में परीक्षा को बुरा न जानो और बुरा वही जानेगा जो सम्पूर्ण मोमिन नहीं है। क़ुरआन शरीफ़ फ़रमाता है कि हम कभी तुम्हारी माल से या जान से अथवा संतान से तथा खेतों आदि की हानि के द्वारा परीक्षा लिया करेंगे परन्तु जो ऐसे समय पर संतोष करते तथा शुक्रगुज़ार रहते हैं तो उन लोगों को शुभ सूचना दे दो कि उनके लिए अल्लाह तआला की रहमत के द्वार खुलेंगे तथा उन पर ख़ुदा की बरकतें होंगी जो ऐसे समय पर कहते हैं कि اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّآ اِلَیۡہِ رٰجِعُوۡنَ अर्थात हम तथा हमसे सम्बंधित समस्त चीज़ें ख़ुदा ही की ओर से हैं और फिर अन्ततः उनको लौटना ख़ुदा की ओर ही है। किसी प्रकार की हानि का दुःख उनके दिल को नहीं खाता और वे लोग अल्लाह की प्रसन्नता के स्तर पर होते हैं। ऐसे लोग संतोषी होते हैं और संतोषियों के लिए ख़ुदा ने असंख्य प्रतिफल रखे हुए हैं। फिर आप फ़रमाते हैं- कुछ लोग अल्लाह तआला पर आरोप लगाते हैं कि वह हमारी दुआ को क़बूल नहीं करता, वलियों पर आपत्ति करते हैं कि उनकी अमुक दुआ क़बूल नहीं हुई। फ़रमाया कि वास्तव में वे लोग नादान हैं, इस अल्लाह के क़ानून से अपरिचित होते हैं। जिस व्यक्ति को ख़ुदा से इस प्रकार का मामला पड़ा होगा वह भली भांति इस नियम से अवगत होगा। अल्लाह तआला ने, मान लेने तथा मनवाने के दो नमूने पेश किए हैं उन्हीं को मान लेना ईमान है। तुम ऐसे न बनो कि एक ही बात पर ज़ोर दो। ऐसा न हो कि तुम ख़ुदा का विरोध करके उसके द्वारा निश्चित नियमों को तोड़ने का प्रयास करने वाले बनो। आपने फ़रमाया कि इंसान के लिए प्रगति करने के दो ही नियम हैं। प्रथम तो इंसान आदेशों की व्याख्या अर्थात नामज़, रोज़ा, ज़कात और हज इत्यादि शरीअत के द्वारा दिए गए आदेशों की पाबन्दी से, जो कि ख़ुदा के आदेशानुसार स्वयं करता है परन्तु ये आदेश क्यूंकि इंसान के अपने हाथों में होते हैं इस कारण से कभी इनमें सुस्ती एंव आलस भी कर बैठता है तथा कज़ी इनमें कोई सरलता एंव सुविधा का मार्ग भी निकाल लेता है। इसी लिए अल्लाह तआला ने इंसान की प्रकृति की सम्पूर्णता के लिए एक अन्य मार्ग रख दिया और फ़रमाया कि हम परीक्षा लेते रहेंगे, तुमको कभी कुछ भय देकर, कभी भूखा रखकर, कभी सम्पत्ति, जान तथा फलों में हानि देकर। परन्तु इन विपत्तियों एंव कठिनाईयों तथा निर्धनता एंव अनशन पर धैर्य रखते हुए اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّآ اِلَیۡہِ رٰجِعُوۡنَ कहने वाले को सुसमाचार दे दो कि उनके लिए बड़े बड़े प्रतिफल, ख़ुदा की रहमतें तथा उसके विशेष इनाम आरक्षित हैं। अतः इस बात को सदैव सम्मुख रखना चाहिए कि न तो हमारे दिल में कभी यह विचार आए कि ख़ुदा तआला क्यूँ बड़ी बड़ी हानियों एंव विपत्तियों से हमें परिचित कराता है तथा न ही किसी विरोधी हास परिहास करने अथवा कहने पर कि यदि अल्लाह तआला तुम्हारे साथ है तो फिर तुम्हारी हानि क्यूँ होती है, हम दुःखी न हों।

इन वृत्तांतों में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमारे सामने जो बातें बयान फ़रमाई हैं इनमें से कुछ विशेष बिन्दु फिर मैं आपकेसामने रखता हूँ। आपने फ़रमाया कि सदैव याद रखो कि जब कठिनाईयाँ एंव विपत्तियाँ रसूलों पर अथवा अल्लाह तआला के प्यारों पर आती हैं और इसी संदर्भ में नबियों की जमाअतों पर भी आती हैं जो उनकी शिक्षानुसार चलने वाले हों। तो ख़ुदा तआला उन्हें किसी कठिन परिस्थिति में डालने के लिए अथवा दंड देने के लिए कठिनाईयों में से नहीं गुज़ारता बल्कि उनको इनामों का सुसमाचार देता है और जब इस प्रकार की विपत्तियाँ ख़ुदा तआला के रसूलों तथा उनकी जमाअत के विरोधियों पर आती हैं तथा अन्य लोगों पर आती हैं तो वे उनका विनाश करने के लिए आती हैं तथा उनको नष्ट कर देती हैं। फिर आपने फ़रमाया कि विपत्तियों पर धैर्य रखने वाले अल्लाह तआला के असीमित सवाब के उत्तराधिकारी बनते हैं।

अतः एक मोमिन को धैर्य का अर्थ समझने की आवश्यकता है। धैर्य का यह अर्थ नहीं कि इंसान किसी हानि पर खेद प्रकट न करे अपितु इसका अर्थ यह है किसी हानि, किसी कठिनाई को अपने ऊपर इतना हावी न कर ले कि चेतना खो बैठे तथा निराश होकर बैठ जाए तथा अपने कार्यशीलता को प्रयोग में न लाए। अतः एक सीमा तक खेद भी प्रकट करना उचित है, करना चाहिए किसी हानि पर और इसके साथ ही एक नए संकल्प के साथ आगे की चुनौतियों के निवारण के लिए पहले से बढ़कर प्रयास का संकल्प तथा कर्मों की आवश्यकता है। फिर यह भी याद रखना चाहिए कि धैर्य रखने वाले को ही दुआ की वास्तविकता भी मालूम होती है। कभी अल्लाह तआला तुरन्त दुआ को क़बूल कर लेता है तो कज़ी अल्लाह तआला किसी गुप्त भेद के कारण दुआ क़बूल नहीं करता परन्तु मोमिन का काम है कि प्रत्येक दशा में अल्लाह तआला की प्रसन्नता पर प्रसन्न रहे और अल्लाह तआला के किसी काम पर शिकायत न करे। यही वास्तविक धैर्य है और जब इस प्रकार की संतोष पूर्ण दशा हो तो फिर अल्लाह तआला अपने बन्दों को अत्यधिक इनाम देता है। आपने फ़रमाया कि अल्लाह तआला के वास्तविक बन्दे विपत्तियों के समय भी आनन्द प्राप्त कर रहे

होते हैं क्यूंकि उनको दिखाई दे रहा होता है कि इन कठिनाईयों के पीछे भी अल्लाह तआला के असीमित इनाम एंव कृपाएँ चली आ रही हैं। अतः आपने फ़रमाया कि मोमिन पर विपत्तियाँ एंव कठिनाईयाँ उनके पापों के कारण नहीं आतीं बल्कि अल्लाह तआला की ओर से एक परीक्षा होती है ताकि दुनिया को भी पता चल जाए कि ख़ुदा तआला के बन्दे प्रत्येक परिस्थिति में अल्लाह तआला की प्रसन्नता पर प्रसन्न रहने वाले होते हैं। आपने फ़रमाया कि दुनिया में सबसे अधिक प्यारा अस्तित्व, अल्लाह तआला को जो है या था, वह आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अस्तित्व था परन्तु आपको बड़ी कठिनाईयाँ झेलनी पड़ीं बल्कि व्यक्तिगत विपत्तियाँ भी पहुंचीं तथा जमाअती विपत्तियाँ भी पहुंचीं और ये कठिनाईयाँ जितनी आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पहुंचीं हैं किसी अन्य को नहीं पहुंचीं परन्तु हर प्रकार की कठिनाईयों में आपके धैर्य तथा अल्लाह की प्रसन्नता में प्रसन्न रहने का नमूना दुनिया में हमें अन्य किसी स्थान पर दिखाई नहीं देता और यही वह उच्च श्रेणी का आचरण है जो समस्त मुसलमानों के लिए सुन्दर मार्ग दर्शन है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हमें भी सच्ची तौबा की ओर ध्यान दिलाते हुए फ़रमाते हैं कि यह भी तुम्हारी सफलताओं एंव परीक्षाओं में से सफलता पूर्वक निकलने के लिए अतिआवश्यक है। अतः मोमिन का काम है कि कर्मों के साथ साथ तौबा की ओर भी ध्यान दे। अर्थात प्रत्येक कठिनाई एंव परीक्षा के समय अल्लाह तआला के समक्ष झुक कर अपनी दुर्बलताओं को स्वीकार करे तथा फिर अच्छे कर्मों के द्वारा अपने सुधार के क्रम को जारी रखे। आप फ़रमाते हैं कि जिस प्रकार एक माली पौधा लगाकर फिर उसे पानी देता है, उसे पालता है, उसे सींचता है, इसी प्रकार मोमिनों को भी चाहिए कि ईमान के पौधे को नेक कर्मों का पानी लगाएँ। यदि यह करोगे तो यही एक मोमिन की सफलता का कारण बन जाता है। आपने फ़रमाया कि लोगों की बातों से परेशान होने की आवश्यकता नहीं, लोग तो अल्लाह के वलियों पर भी आपत्ति करते आए हैं कि उनकी अमुक दुआ क़बूल नहीं हुई, वह दुआ क़बूल नहीं हुई। आपने फ़रमाया कि इस प्रकार के आक्षेप करने वाले वास्तव में अल्लाह के क़ानून से अनभिज्ञ हैं। एक मोमिन तो जानता है कि अल्लाह तआला कभी तो मान लेता है और कभी मनवाता है, यही उसका नियम है। आपने हमें उपदेश दिया कि तुम ऐसे न बनो जो इस नियम को भंग करने वाले होते हैं। आपने फ़रमाया कि मोमिनों के लिए विपत्तियाँ एंव कठिनाईयाँ सदैव नहीं रहते, आते हैं चले जाते हैं। अतः धैर्य, दुआ तथा अपने कर्मों के द्वारा अल्लाह तआला के फ़ज़्लों को ग्रहण करने वाले बनो और जब जी कठिन परिस्थितियों में से गुज़रो, जब भी विपत्तियाँ आएँ तो اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّآ اِلَیۡہِ رٰجِعُوۡنَ कहने वालों में शामिल हो जाओ।

पिछले दिनों यहाँ मस्जिद बैतुल फ़तूह के संलग्न दो हॉलों में आग के कारण बड़ी क्षति हुई, बड़ी भयानक आग थी। इस पर जब विभिन्न टी वी चैनल्स तथा दूसरे मीडिया ने समाचार दिया है तो कुछ द्वेष की आग में बढ़े हुए लोगों ने बड़ी प्रसन्नता प्रकट की बल्कि इस बात पर खेद प्रकट किया कि इनके केवल दो हॉल जले हैं, मस्जिद क्यूँ नहीं जली। तो यह तो आजकल के कुछ मुसलमानों का हाल है परन्तु सभी ऐसे नहीं हैं। कुछ क्षेत्रों से मुसलमानों ने हमसे सहानुभूति भी प्रकट की है। इस घटना ने जमाअत का एक विस्तृत परिचय भी करा दिया है दुनिया में। यद्यपि हमें तो खेद हुआ, हमने धैर्य भी दिखाया और इन्ना लिल्लाह भी पढ़ा परन्तु अल्लाह तआला ने इस क्षति तथा परीक्षा में भी जमाअत के समर्थन में लोगों को खड़ा करके दुनिया को बता दिया कि मैं इनके साथ हूँ। आग लगने का क्या कारण हुआ यह तो पुलिस को अभी तक स्पष्ट नहीं हुआ। अतः जो भी कारण हुआ, यह बात हमारे यहाँ मस्जिद का जो स्टाफ़ है, कार्यकर्ता हैं और प्रबन्धक हैं उनकी इस त्रूटि की ओर भी संकेत करती है और उनको अत्यधिक इस्तिग़फ़ार करनी चाहिए। कुछ मुसलमानों की यह धारणा कि ख़ुशी मना रहे हैं तथा सुब्हानल्लाह पढ़ रहे हैं। ठीक है आज यह सुब्हानल्लाह उपहास के रंग में तथा अल्लाह तआला के स्वाभिमान को भड़काने के लिए पढ़ रहे हैं, तो पढ़ें परन्तु इन्शाअल्लाह शीघ्र ही इससे अच्छा तथा सुन्दर निर्माण करके हम वास्तविक सुब्हानल्लाह पढ़ेंगे और माशाअल्लाह भी पढ़ेंगे। जैसा कि मैंने कहा परीक्षा तो अल्लाह तआला की सुन्नत है अभी यह भी तो नहीं पता कि क्या कारण हुआ इसका और किस प्रकार यह सब कुछ हुआ। यदि यह कोई षडयंत्र और दुर्भावना थी तो इन बातों से जमाअत की प्रगति नहीं रुक सकती। हाँ, प्रबन्धकों को अपनी अव्यवस्था देखने तथा इन पर विचार करने के लिए इस घटना को सावधान करने वाला होना चाहिए। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दावे से ही आपके विरुद्ध षडयंत्र और आग लगाने का क्रम जारी है परन्तु इसका क्या परिणाम निकल रहा है। जमाअत की प्रगति हमें हर स्थान पर दिखाई देती है। एक आग तो प्रत्यक्ष आग है परन्तु एक आग इंसान के भीतर द्वेष एंव कुधारणा की आग भी है। यद्यपि प्रत्यक्ष में तो हमारी मस्जिद से संलग्न एक भाग को आग लगी परन्तु हमारी तो यह क्षति इन्शाअल्लाह पूरी हो जाएगी और इन्शाअल्लाह हम अल्लाह तआला के शुभ समाचारों से अंश भी प्राप्त करने वाले होंगे और ये धैर्य और दुआ हमें अल्लाह तआला की ठंडक और ठंडी छाँव की गोद में ले लेगा परन्तु इस प्रत्यक्ष आग से भी विरोधियों के द्वेष की आगें भी भड़क रही हैं। जो प्रत्यक्ष आग हमारे विरुद्ध भड़काई थी वह भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के विरोधियों को जला रही है।

एम टी ए की व्यवस्था का भी एक अंश यहीं है बल्कि बड़ा अंश यहाँ है, उस दिन राह-ए-हुदा का सीधा प्रसारण का प्रोग्राम था तो प्रोग्राम वालों ने निर्णय लिया कि अब एम टी ए स्टूडियो तक हमारी पहुंच नहीं है और पता नहीं वहाँ क्या परिस्थितियाँ हैं इसमें जाया भी जा सकता है कि नहीं जाया जा सकता इस लिए रिकार्डिंग दिखला देंगे, सीधा प्रसारण नहीं करेंगे। जब मुझे पता चला तो मैंने कहा मस्जिद फ़ज़्ल से सीधा प्रसारण होगा कोई इसमें रोक की बात नहीं और इस प्रकार के निर्णय स्वयं करने भी नहीं चाहिएं, मुझसे पूछे बिना। उनको चाहिए था कि तुरन्त मुझसे पूछते कि इस सीधे प्रसारण के लिए अब क्या किया जाए। यदि लाईव प्रोग्राम न होता तो यह अहमदियों को भी तथा दुनिया को भी ये पैग़ाम दे रहे होते कि हमारी पूरी व्यवस्था इस घटना के काण अस्त व्यस्त हो गई, जो नहीं हुई। तो हमारा काम यह नहीं है कि क्षति के कारण निराश होकर बैठ जाएँ अथवा अपने स्थान छोड़ कर केवल तमाशा देखने के लिए खड़े हो जाएँ वहां जाकर। बल्कि तुरन्त यथा सम्भव इसका विकल्प खोजने का प्रयास होना चाहिए था और करना चाहिए और फिर आगे अल्लाह तआला पर छोड़ना चाहिए।

अतः इस प्रकार इन बातों से हमें कभी घबराहट नहीं हुई और न होनी चाहिए। यदि यह घटना भी परीक्षा है तो हमें यह प्रतिज्ञा करनी चाहिए और फिर अपनी कार्यशीलता से प्रकट करना चाहिए कि अल्लाह तआला के समक्ष झुकते हुए हम दुआएँ करते हुए इस परीक्षा से भी सफलता पूर्वक गुज़रेंगे। यह क्षति चाहे किसी भी कारण से हुई है किसी ने भी पहुंचाई है, हमारी अयोग्यता के कारण हुआ है, असावधानी के कारण हुआ है अथवा दुर्घटना है जो भी है इसका कारण, इसकी इन्शाअल्लाह इसको हमने ही अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से दोबारा सुन्दर रूप में वापस लाना है। अभी इसके लिए किसी अलग से तहरीक की आवश्यकता नहीं, मुझे कहने की जमाअत को। परन्तु लोगों ने बिना कहे ही स्वयं इसके लिए सहायता भेजनी आरम्भ कर दी है। बच्चों ने विशेष रूप से इसके लिए चन्दा देना आरम्भ किया हुआ है बिना कहे स्वयं बच्चे अपनी जो बघ्घियाँ हैं वे पेश कर रहे हैं। सात आठ वर्ष की एक बच्ची ने अपने बाप को कहा कि इन हॉलों में तो हम जाकर खाना भी खाया करते थे, खेलते भी थे, प्रोग्राम भी करते थे तो हमें इसमें अपना योगदान देना चाहिए, इसको पुनः बनाने में, यह बच्ची की भावनाएँ हैं। इस लिए मेरे पास जो पैसे जमा हैं मैं देती हूँ और अपनी बघ्घी उठाकर ले आई। अतः जब क़ौम के बच्चे भी ऐसा दृढ़ संकल्प रखते हों तो फिर उनको कौन निराश कर सकता है यह तुच्छ सी हानि क्या कर सकती है।

एक सज्जन लाइब्रेरी में बैठे काम कर रहे थे और उनका पता ही न चला कि क्या हो रहा है बाहर। अल्लाह तआला ने चमत्कारी रंग में उन्हें बचा लिया, उनके लिए तो यह भी बड़ा चमत्कार है। यह कुछ सैकेंड की देर भी उनको जला कर रख सकती थी। इस प्रकार अल्लाह तआला ने बड़ा फ़ज़्ल फ़रमाया। हुज़ूर ने फ़रमाया कि द्वेष रखने वालों के द्वेष तो और बढ़ेंगे, इसके लिए दुआओं की ओर भी ध्यान दें। ربی کل شئی خادمك رب فاحفظنی وانصرنی وارحمنی की दुआ और اللھم نجعلك فی نحورھم ونعوذبك من شرورھم की दुआ पढ़ें और ربنا اٰتنا فی الدنیا حسنۃ وفی الآخرۃ حسنۃ وقنا عذاب النار की दुआ पढ़नी चाहिए। यदि यह घटना में हमारी अयोग्यता एंव दुर्बलता के कारण हुई है तो इस्तिग़फ़ार भी अत्यधिक पढ़ने की आवश्यकता है। अल्लाह तआला भविष्य में भी हमें अपने कर्त्तव्य उचित रंग में निभाने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए तथा इन दुर्बलताओं को दूर फ़रमाए और यदि यह परीक्षा है तो अल्लाह तआला हमें इसमें से भी सफलता पूर्वक गुज़ारे और अपने इनाम पहले से बढ़कर अता फ़रमाए तथा उन संतोषियों में हमारी गणना करे जिनको सुसमाचार अता फ़रमाता है और पहले बढ़कर हम प्रगति देखें।

ख़ुत्बः जुम्अः के अन्त में हुज़ूर-ए-अनवर ने मुकर्रम चौधरी महमूद अहमद साहब दर्वेश क़ादियान, मुकर्रम ख़ालिद सलीम अब्बास साहब अबुलहाजी साहब ऑफ़ सीरिया और सीरिया ही में शहीद होने वाले एक अहमदी भाई का शुभ वर्णन, सेवाओं तथा विशेषताओं का वर्णन किया और जनाज़े की नामज़ ग़ायब पढ़ाने की घोषणा फ़रमाई।

Khulasa Khutba-e-Juma, Huzoor-e-Anwer Ayyadahullhu Ta'la 02.10.2015

सैय्यदना हुज़ूर अनवर की मंज़ूरी से मजलिस अन्सारुल्लाह भारत दिनांक 25 जौलाई से 15 अक्तूबर 2015 तक अपनी डायमंड जुबली मना रही है

BOOK-POST (PRINTED MATTER)

TO,.....

.....

From; *Office Ansarullah Bharat, Aiwan-e-Ansar, Moh; Ahmadiyya,Qadian-143516Via; Batala, Dist; Gurdaspur (Pb)*